अध्याय
09

जाति व्यवस्था की चुनौतियाँ

सीखने के प्रतिफल—

बच्चे जाति, सामाजिक सुधार से जुड़े मुद्दों पर औपनिवेशिक प्रशासन के कानूनों और नीतियों का विश्लेषण कर पाएँगे।

अनिष्का के विद्यालय में आज कबीर का दोहा पढ़ाया जा रहा था।

जाति-पाति पूछे नहीं कोई।

हरि को भजे सो। हरि के होई।।

वह सोचने लगी जाति क्या हैं ?

© JCERT not to be republished

प्रारम्भ में भारतीय समाज सीधा और सरल था। यह समाज अपने कर्मो के आधार पर चार प्रकार के वर्णों में विभक्त था। लेकिन धीरे-धीरे कई तरह की बुराईयाँ और जटिलताएँ इस समाज में प्रवेश कर गईं। जैसे— जाति-व्यवस्था, सती-प्रथा आदि।

जाति व्यवस्था के खिलाफ बुद्ध, कबीर, नानक, चैतेन्य महाप्रभु आदि ने उपदेश दिये थे। आधुनिक काल में धर्म और समाज के इन कुप्रथाओं के विरूद्ध धार्मिक-सामाजिक सुधार आंदोलन चला, जो इतिहास में पुनर्जागरण के नाम से विख्यात है। इस पुनर्जागरण का नेतृत्व राजाराम मोहन राय जैसे—प्रबुद्ध भारतीयों ने किया। कुछ अंग्रेजों ने भी आंदोलन का समर्थन किया तथा सती प्रथा अंत (1829 ई.) और विधवा-पुनर्विवाह (1856 ई.) जैसे—सुधारवादी कानून बनाये। अंग्रेजों के प्रशासनिक नीतियों से जाति की कठोरता भी कम हुई।

सामाजिक जीवन में जाति व्यवस्था—

प्राचीनकाल के समाज में कोई जाति नहीं थी। कर्मों के आधार पर समाज में चार वर्गो—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में बँटा हुआ था। जो लोग पूजा-पाठ करवाते थे उन्हें ब्राह्मण कहा जाता था। युद्ध करने वाले क्षत्रिय, व्यापार करने वाले वैश्य और सेवा कर्म करने वाले को शूद्र की श्रेणी में रखा जाता था। समाज में उच्च वर्ग का दर्जा क्रमानुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र को दिया गया था। बाद में इसी वर्ण व्यवस्था ने जाति-व्यवस्था का रूप ले लिया। उच्च वर्ण के लोगों द्वारा नीचले वर्ण के लोगों का लगातार शोषण होने लगा। ऊँच-नीच और छुआ-छूत भेदभाव ने जब समाज में भयावह रूप धारण कर लिया, तब कई समाज सुधारकों के द्वारा इस भेदभाव का खत्म करने की कोशिश की गयी। कई समाज सुधारक ऐसे थे जो जाति आधारित सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध थे।

ऋग्वेद में किसी परिवार का एक सदस्य कहता है- "मैं कवि हूँ, मेरे पिता वैद्य हैं और माता चक्की चलाने वाली है, भिन्न-भिन्न व्यवसायों से जीविकापार्जन करते हुए हम सभी एक साथ रहते हैं।"

परिवर्तन की दिशा में उठते कदम—

उन्नीसवीं शताब्दी की शुरूआत से ही हमें सामाजिक रीति-रिवाजों और मूल्य-मान्यताओं से संबंधित बहस और चर्चाओं का स्वरूप बदलता दिखाई देता है। इसका एक मुख्य कारण यह था कि संचार के नये तरीके विकसित हो रहे थे। पहली बार किताबें, अखबार, पत्रिकाएँ पर्चे और पुस्तिकाएँ छप रही थीं। आम लोग भी उन चीजों को पढ़ सकते थे और अपने विचार व्यक्त कर सकते थे।

नव जागरण के अग्रदूत राजा राम मोहन राय

इस तरह की चर्चाएँ और बहसें अकसर भारतीय सुधारकों और सुधार संगठनों की तरफ से शुरू होती थी। राजा राम मोहन रॉय —(1772-1833) इसी तरह के एक सुधारक थे। इन्हें 'आधुनिक भारत का पिता' एवं 'नव प्रभात का तारा' कहा जाता है। उन्होंने जाति-प्रथा को एक ऐसी बुराई के रूप में बताया जिसने हमारे समाज को उच्च और निम्न वर्ग में बाँट दिया है। इस कारण बड़ा समुदाय राष्ट्रीयता की भावना से दूर होता जा रहा है। उन्होंने फारसी भाषा में तोहफत-उल-मुवाहिदीन नामक पुस्तक लिखकर एकेश्वरवाद का समर्थन किया। उन्होंने कलकत्ता से 1828 ई. में ब्रह्मों सभा के नाम से एक सुधारवादी संगठन बनाया था। जिसे बाद में ब्रह्मो समाज के नाम से जाना गया। इसका उद्देश्य हिन्दू धर्म में सुधार लाना था। राममोहन ने 1817 ई. में कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज और 1825 ई. में वेदांत कॉलेज की स्थापना की।

© JCERT not to be republished

स्व-मूल्यांकन

(1) भारत में किस शताब्दी में धार्मिक-सामाजिक सुधार आंदोलन चला ?

(2) सती प्रथा का अंत कब हुआ ?

(3) ऋग्वेदिक काल में भारतीय समाज का चार वर्णो में विभाजन किस आधार पर था ?

(4) नवजागरण का अग्रदूत किसे कहा जाता था ?

(5) ब्रह्मो सभा की स्थापना कब हुई ?

उत्तर—(1) 19 वीं, (2) 1829 ई., (3) कर्म, (4) राजा राम मोहन रॉय, (5) 1828 ई.।

18वीं सदी के अंतिम चरण में कुछ यूरोपीय तथा भारतीय विद्वानों ने भारत के प्राचीन ज्ञान-विज्ञान की खोज शुरू कर दिया था। प्राचीन भारत के दर्शन, विज्ञान, धर्म तथा साहित्य की अधिकाधिक जानकारी मिलने लगी, तो भारतीयों में अपनी सभ्यता के प्रति गौरव एवं अभिमान की भावना जगने लगी। इसी भावना से प्रेरित होकर सुधारकों ने अंधविश्वासों तथा अमानवीय प्रथाओं के विरुद्ध संघर्ष शुरू किया। इन्होंने अपने संघर्ष में प्राचीन ग्रन्थों के प्रमाण भी प्रस्तुत किए।

समाज सुधार के प्रयास—

उन्नीसवीं सदी के आरंभिक दशकों से देश के कई भागों में सामाजिक सुधार के प्रयास दिखने लगे। जाति उन्मूलन के उद्देश्य से बम्बई में 1840 ई. में परमहंस मंडली का गठन किया गया। इन समाज सुधारकों और संगठनों के सदस्यों में कई लोग ऊँची जातियों के भी थे, लेकिन उन्होंने तथाकथित निचली जातियों के लिए आंदोलन किये। ये समाज सुधारक भोजन और स्पर्श जैसे विषयों में परम्परागत जातीय नियमों का पालन नहीं करते थे। उन्होंने सामाजिक जीवन के जातीय पूर्वाग्रहों को त्यागने का आह्वान किया। 1867 ई. में स्थापित प्रार्थना समाज ने सभी जातियों की आध्यात्मिक समानता पर बल दिया।

जरा सोचिए—परमहंस मंडली के तथाकथित ऊँची जातियों के लोग तथाकथित निचली जातियों के साथ बैठकर भोजन क्यों करते थे ?

19वीं सदी में ईसाई मिशनरियों ने आदिवासी समुदायों और तथाकथित निम्न जातियों के बच्चों के लिये कई स्कूल खोले। शिक्षा के रूप में इन बच्चों को दुनिया में अपना रास्ता ढूंढने का नया साधन मिल गया। इसी काल में बड़ी संख्या में गरीब लोग नौकरी की तलाश में गाँव छोड़कर शहर जाने लगे। शहर जाने वालों में से बहुत सारे 'निम्न' जातियों के लोग भी थे। कुछ लोग मॉरिशस, त्रिनीदाद और इंडोनेशिया आदि स्थानों पर बागानों में काम करने भी चले गये। इस समय कई दूसरी तरह की नौकरियों के अवसर भी मिलने लगे थे। सेना में बहाली होने लगी थी। अछूत माने जाने वाले महार समुदाय के काफी लोगों को महार रेजीमेंट में नौकरी मिल गयी। दलित आंदोलन के नेता बी.आर. अम्बेडकर के पिता एक सैनिक स्कूल में शिक्षक बन गये।

© JCERT not to be republished

जूते कौन बना सकता है ?

चमड़े का काम करने वालों को परंपरागत रूप से नीची नजर से देखा जाता था, क्योंकि वे मृत पशुओं का चमड़ा निकालते थे। पहले विश्वयुद्ध के दौरान सेना के लिए जूतों की ज्यादा माँग हो गई, किन्तु चमड़े के काम के प्रति पूर्वाग्रह अर्थात् जाति बंधन के कारण केवल मोची ही जूते तैयार कर सकते थे। लिहाजा वे ज्यादा कीमत की माँग करने लगे और इससे उनकी आर्थिक स्थिति बेहतर हुई।

प्रोजेक्ट कार्य—

बच्चे पता करेंगे कि वर्तमान के जूतों का निर्माण किस प्रकार होता है तथा इस कार्य में कौन लोग शामिल हैं ?

स्व -मूल्यांकन

मिलान कीजिए

	अ		ब
(क)	परमहंस मण्डली	(i)	शिक्षक
(ख)	प्रार्थना समाज	(ii)	महार रेजिमेंट
(ग)	बी. आर. अम्बेडकर के पिता	(iii)	1840 ई.
(घ)	मोची	(iv)	1867 ई.
(ड.)	महार जाति	(v)	चमड़े का काम

उत्तर—(क) iii, (ख) iv, (ग) i, (घ) v, (ड.) ii

समानता और न्याय की माँग—

उन्नीसवीं सदी में ही देश के कई हिस्सों से तथाकथित निम्न जातियों के भीतर से भी लोग जातीय भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाने लगे थे।

© JCERT not to be republished

मध्यभारत में सतनामी आंदोलन की शुरूआत घासीदास ने की, जिन्होंने चमड़े का काम करने वालों को संगठित किया और उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार के लिये आंदोलन छेड़ दिया। पूर्वी बंगाल में हरिदास ठाकुर के मतुआ पंथ ने चांडाल काश्तकारों के बीच काम किया। हरिदास ने जाति व्यवस्था को सही ठहराने वाले कुछ ब्राह्मणवादी ग्रन्थों पर सवाल उठाया।

फूल बेचने वालों के घर में 1827 ई. में जन्में ज्योतिराव फूले, शिवाजी और थॉमस पेन के विचारों तथा स्वतंत्रता और समानता के सिद्धान्तों से प्रभावित थे। उन्होंने दलितों और स्त्रियों के उद्धार के लिये अपना जीवन अर्पित कर दिया। 1848 ई. में उन्होंने निम्न जाति की कन्याओं के लिये पहला स्कूल खोला। उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई फूले को पढ़ाया ताकि वह उस स्कूल में पढ़ा सके।

सितम्बर 1873 ई. में उन्होंने सत्य शोधक समाज की स्थापना की और सभी जातियों और धर्म के लोगों के लिये इसके द्वार खोल दिए। सत्य शोधक समाज का लक्ष्य था दलित जाति के लोगों के लिए समान अधिकार प्राप्त करना। महात्मा फूले के अनुसार ऊँची जातियों का उनकी जमीन और सत्ता पर कोई अधिकार नहीं है। यह धरती यहाँ के लोगों, तथाकथित निम्न जातियों की हैं। फूले उच्च जाति नेताओं के उपनिवेशवाद विरोधी राष्ट्रवाद के भी आलोचक थे।

1873 ई. में ज्योतिराव फूले ने गुलामगिरी नामक पुस्तक लिखा। इसमें उन्होंने अमेरिकी गृहयुद्ध (1861-65) की प्रशंसा की क्योंकि इसने वहाँ के गुलामों को मुक्त किया था। यह पुस्तक उन्होंने उन सभी अमेरिकियों को समर्पित किया, जिन्होंने गुलामों (दासों) को मुक्ति दिलाने में संघर्ष किया। पुस्तक में उन्होंने भारत के निम्न जातियों और अमेरिका के काले गुलामें की दुर्दशा को समान बताया।

केरल के ऐझावा जाति के भी नारायण गुरू ने जातिगत भेदभाव का विरोध किया। उनका कथन है—''सारी मानवता की एक जाति एक धर्म एक ईश्वर।''

© JCERT not to be republished

स्व-मूल्यांकन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) घासीदास ने किस वर्ग समूह को संगठित कर उसके स्थिति में सुधार के लिये आंदोलन किया ?

(क) चमड़े का काम करने वाले (ख) फूल बेचने वाले

(ग) नाव चलाने वाले (घ) चाक पर बर्तन बनाने वाले

(2) हरिदास ठाकुर ने भारत के किस क्षेत्र के चांडाल काश्तकारों के बीच काम किया ?

(क) मध्य भारत (ख) पश्चिमी भारत (ग) दक्षिणी भारत (घ) पूर्वी बंगाल

(3) केरल के ऐझावा जाति से संबंधित कौन थे ?

(क) घासीदास (ख) हरिदास ठाकुर (ग) नारायण गुरु (घ) ज्योतिराव फूले

(4) निम्न जाति की कन्याओं के लिये पहला स्कूल किसने खोला ?

(क) घासीदास (ख) हरिदास ठाकुर (ग) ज्योतिराव फूले (घ) बी.आर. अम्बेडकर

(5) ज्योतिराव फूले ने गुलामगिरी नामक पुस्तक की रचना कब की ?

(क) 1873 ई. (ख) 1827 ई. (ग) 1875 ई. (घ) 1850 ई.

उत्तर—(1) क, (2) घ, (3) ग, (4) ग, (5) क।

© JCERT not to be republished

बीसवीं सदी में जाति सुधार आंदोलन—

20वीं शताब्दी में जाति सुधार आंदोलनों ने और जोर पकड़ा। श्री नारायण गुरू ने श्री नारायण धर्म परिपालन योगम (1903 ई.) के द्वारा निम्न वर्ग को मंदिर में प्रवेश दिलाने का प्रयास किया। इस संगठन का उद्देश्य छुआ-छूत का विरोध तथा विवाह, पूजा और अंतिम संस्कार को सरल बनाना था। 1920 के दशक में यह संगठन गाँधीजी के राष्ट्रवादी विचारों से प्रभावित हुआ। बाद में इस पर साम्यवादी विचारों का प्रभाव पड़ा।

पश्चिम भारत में डॉ. भीमराव अम्बेडकर और दक्षिण में ई. वी. रामास्वामी नायक जैसे दलित नेताओं ने जाति-सुधार आंदोलन को नई ऊँचाईयाँ प्रदान की।

प्रोजेक्ट कार्य—

शिक्षक और इंटरनेट की मदद से साम्यवाद पर संक्षिप्त नोट्स लिखें।

महान दलित नेता भीमराव अम्बेडकर का जन्म मऊ, मध्यप्रदेश के एक महार परिवार में हुआ था। उन्होंने दैनिक जीवन में जातीय भेदभाव को करीब से देखा था। स्कूल में उन्हें कक्षा के बाहर जमीन पर बैठना

पड़ता था। विद्यालय में स्वर्ण बच्चों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले नल से पानी पीने की ईजाजत नहीं थी। स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद वे उच्च अध्ययन के लिये अमेरिका गये तथा वहाँ से 1919 ई. में भारत लौटे। 1927 ई. से 1935 ई. के बीच अम्बेडकर ने मंदिरों में प्रवेश के तीन आंदोलन किये। इसके माध्यम से वे समाज में व्याप्त जातीय पूर्वाग्रहों को दिखाना चाहते थे।

जरा सोचिये—

क्या अभी विद्यालय अथवा मंदिरों में जाति के आधार पर कोई भेदभाव होता है ?

पेरियार के नाम से प्रसिद्ध ई. वी. रामास्वामी नायकर एक मध्यवर्गीय परिवार में पले-बढ़े थे। अपने प्रारम्भिक जीवन में वे संन्यासी थे और उन्होंने संस्कृत शास्त्रों का गंभीरता से अध्ययन किया था। बाद में वे कांग्रेस के सदस्य बनें परन्तु जब उन्होंने राष्ट्रवादियों द्वारा आयोजित की गई एक दावत में देखा कि वहाँ बैठने के लिये निम्न जातियों और उच्च जातियों के लिए अलग-अलग इंतजाम हुआ है तो उन्होंने हताश होकर कांग्रेस पार्टी छोड़ दी। पेरियार को समझ में आ चुका था कि 'अछूतों' को अपने स्वाभिमान के लिए खुद लड़ना होगा। इसीलिए उन्होंने 'स्वाभिमान आंदोलन' चलाया। उनका विचार था कि निचली जातियों पर अपनी सत्ता तथा महिलाओं पर पुरूष का प्रभुत्व स्थापित करने के लिए धार्मिक ग्रन्थों का सहारा लिया है।

मोहनदास करमचन्द गाँधी भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेतृत्वकर्त्ता के साथ-साथ एक समाज सुधारक भी थे। महिलाओं की स्थिति में सुधार और अछूतों का उद्धार उनके प्रमुख कार्यक्रम थे। वे दलितों का राजनीतिक प्रतिनिधित्व बढ़ाना चाहते थे।

गाँधी जी के सुझाव पर ही कांग्रेस द्वारा 1919 ई. में छुआछूत के विरुद्ध घोषणापत्र जारी किया गया था। दलितों की स्थिति सुधारने के लिये उन्होंने 1932 ई. में 'अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ' की स्थापना की थी।

निम्न जातीय नेताओं के आंदोलनों से उच्च जातीय राष्ट्रवादी नेताओं के बीच आत्म-मंथन और आत्मालोचना की प्रक्रिया शुरू हुई। कुछ सुधारवादी प्रयास भी उनके द्वारा किया गया। परन्तु रूढ़िवादी हिन्दू समाज ने उत्तर में 'सनातन धर्म सभाओं' तथा 'भारत धर्म महामंडल' और बंगाल में 'ब्राह्मण सभा' जैसे—संगठनों के जरिये इन रूझानों का शक्ति से विरोध किया। भारत की आजादी के बाद भी जाति के मुद्दे पर बहस चलती रही, जो आज भी जारी है।

पता करें—

क्या वर्तमान भारत सरकार जाति के आधार पर किसी के साथ भेदभाव करती हैं ? यदि हाँ तो क्यों ?

© JCERT not to be republished

सुधारों के लिए संगठित होना

केशव चन्द्र सेन और ब्रह्मसमाज—

राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज को लोकप्रिय बनाने से केश्वचन्द्र सेन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाद में इन्होंने 'आदि ब्रह्म समाज' का गठन किया। इन्होंने स्त्रियों की मुक्ति तथा मद्य-निषेध जैसे—सामाजिक सुधारों पर विशेष जोर दिया।

डेरोजियों एवं यंग बंगाल—

1820 के दशक में हेनरी विवियन डेरोजियो हिन्दू कॉलेज कलकत्ता में अध्यापक थे। उन्होंने एंग्लो-इंडियन और 'हिन्दू एसोसिएशन' सहित कई संगठनों का गठन किया। उनके द्वारा शुरू की गई यंग बंगाल मूवमेंट में उनके विद्यार्थियों ने परम्परागओं और रीति-रिवाजों पर उँगली उठाई, महिलाओं के लिए शिक्षा की माँग की और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिये अभियान चलाया। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने उन्हें बंगाल में आधुनिक सभ्यता का अग्रदूत बताया।

रामकृष्ण मिशन और विवेकानन्द—

रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1897 ई. में स्वामी विवेकानन्द ने अपने गुरू रामकृष्ण परमहंस के नाम पर कलकत्ता में किया था। स्वामी विवेकानन्द (1863-1902) के बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। 1893 ई. में अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित प्रथम विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व किया और वेदांत दर्शन के आध्यात्मिक गौरव को पुनर्स्थापित किया।

© JCERT not to be republished

उन्हें सुनने के बाद न्यूयार्क हेराल्ड ने विवरण दिया कि "ऐसे विद्वान राष्ट्र में धर्म प्रचार को भेजना कितना मूर्खतापूर्ण है।" न्यूयार्क में उन्होंने भारतीय धर्म और दर्शन के प्रचार के लिए 'वेदांत सोसाइटी' का गठन किया। पेरिस (फ्रांस) में 1900 ई. में आयोजित द्वितीय विश्व धर्म सम्मेलन में भी उन्होंने भाग लिया। उन्हें 'नव हिन्दू जागरण के संस्थापक' कहा जाता है। रामकृष्ण मिशन का मूल उद्देश्य गरीबों (दरिद्र नारायण) की सेवा थी। उनका मानना था कि मनुष्य की सेवा ईश्वर की सेवा है। सुभाषचन्द्र बोस ने विवेकानन्द को आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन का आध्यात्मिक पिता कहा हैं। आज विवेकानन्द के जन्म दिवस (12 जनवरी) को युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

प्रार्थना समाज—

1867 ई. में बम्बई में आत्माराम पांडुरंग ने अपने सहयोगियों के साथ प्रार्थना समाज की स्थापना की। इस संगठन ने जातीय-बंधन को खत्म करने और बाल विवाह के उन्मूलन के लिये प्रयास किये।

वेद समाज—

मद्रास (चेन्नई) में वेद समाज की स्थापना हुई। इसने जातीय भेदभाव को समाप्त करने और विधवा विवाह तथा महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिये काम किया।

दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज—

उत्तर भारत में धार्मिक और सामाजिक सुधार का सबसे प्रभावशाली आंदोलन दयानन्द सरस्वती ने शुरू किया था। दयानन्द का जन्म 1824 ई. में गुजरात में हुआ था। उनके बचपन का नाम मूलशंकर था। उन्होंने 1875 ई. में बम्बई में आर्य समाज की स्थापना किये, परन्तु 1877 ई. में लाहौर को अपना मुख्यालय बनाया। उन्होंने भारत के पिछडेपन का मुख्य कारण अशिक्षा को माना। शिक्षा का प्रचार-प्रसार, स्त्रियों के उत्थान तथा जाति प्रथा के बंधन को कमजोर करने में आर्य समाज का प्रमुख योगदान रहा।

सर सैय्यद और अलीगढ़ आंदोलन—

मुसलमानों में सामाजिक सुधार तथा आधुनिक शिक्षा के प्रसार के लिये सबसे महत्वपूर्ण आंदोलन सैय्यद अहमद खाँ ने चलाया। उनका जन्म मुगल दरबार के एक सरदार परिवार में हुआ था। उन्होंने 1875 ई. में अलीगढ़ में मोहम्मडन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज खोला जो बाद में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के नाम से जाना गया। यहाँ मुसलमानों को पश्चिमी विज्ञान के साथ-साथ विभिन्न विषयों की आधुनिक शिक्षा दी जाती थी।

© JCERT not to be republished

पारसियों और सिक्खों के सुधार आंदोलन—

देश के दूसरे समुदायों में भी सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन, स्त्रियों के उद्धार और आधुनिक शिक्षा के प्रसार के लिय आंदोलन शुरू हुए। पारसी समाज के अग्रणी समाज सुधारक दादा भाई नौरोजी (1817-1885) ने अपने सहयोगी आर. के. कामा., एस. एस. बंगाली तथा फरदोन जी के साथ मिलकर बम्बई में 1851 ई. में 'रहनुमाई मजदयासन सभा' का गठन किया। सभा ने स्त्रियों की दशा में सुधार, पर्दा प्रथा की समाप्ति और विवाह की आयु बढ़ाने पर बल दिया।

सिक्खों के सुधारवादी संगठन के रूप में सिंह सभाएँ की स्थापना 1873 ई. में अमृतसर से शुरू हुई थी। 1879 ई. में लाहौर में भी सिंह सभा का गठन किया गया। इन सभाओं ने सिख धर्म को अंधविश्वासों, जातीय भेदभाव और गैर-सिख आचरण से मुक्त कराने का प्रयास किया।

स्व-मूल्यांकन—एक शब्द से लेकर एक वाक्य में उत्तर दें।

(1) बी.आर. अम्बेडकर ने 1927 ई. में 1935 ई. के बीच मंदिरों में प्रवेश के कितने आंदोलन चलाये ?

(2) स्वाभिमान आंदोलन किसने चलाया ?

(3) 1932 ई. में अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ की स्थापना किसने की ?

(4) रामकृष्ण मिशन के संस्थापक कौन थे ?

(5) दयानन्द सरस्वती के बचपन का क्या नाम था ?

उत्तर—(1) तीन, (2) ई. वी. रामास्वामी नायकर 'पेरियार', (3) महात्मा गाँधी, (4) स्वामी विवेकानन्द, (5) मूलशंकर।

स्मरणीय तथ्य

- प्रारम्भ में भारतीय समाज चार वर्णों - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में विभक्त था। यही वर्ण-व्यवस्था कालांतर में दुर्गुण के रूप में जाति-व्यवस्था में परिवर्तित हो गई।
- राजा राममोहन राय (1772 – 1833) भारत के प्रमुख समाज सुधारक थे। इन्हें नवजागरण का अग्रदूत आधुनिक भारत का पिता तथा नव प्रभात का तारा आदि नामों से भी जानते हैं।
- मोहन राय ने 1828 ई. में ब्रह्मो सभा नाम से एक सुधारवादी संगठन बनाया, जिसका उद्देश्य हिन्दू धर्म में सुधार लाना था।
- जाति-उन्मूलन के उद्देश्य को लेकर 1840 ई. में परमहंस मण्डली का गठन किया गया।
- आत्माराम पांडुरंग द्वारा 1867 ई. में स्थापित प्रार्थना समाज ने सभी जातियों की आध्यात्मिक समानता पर बल दिया।

© JCERT not to be republished

- 19वीं शताब्दी में कई लोग मॉरिशस, त्रिनीदाद और इण्डोनेशिया के बागानों में काम करने गये और वहीं बस गये।
- बी. आर. अम्बेडकर के पिता एक सैनिक स्कूल में शिक्षक थे।
- मध्य भारत में सतनामी आंदोलन की शुरूआत घासीदास ने किया।
- श्री नारायण गुरु का कथन है—सारी मानवता की एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर।
- ज्योतिराव फूले 1873 ई. में सत्यशोधक समाज की स्थापना किये। उनकी गुलामगिरी पुस्तक में अमेरिकी गृहयुद्ध की प्रशंसा की गई है।
- श्री नारायण गुरू ने 1903 ई. में श्री नारायण धर्म परिपालन योगम की स्थापना किये।
- पेरियार के नाम से प्रसिद्ध ई. वी. रामास्वामी नायकर प्रारम्भिक जीवन में सन्यासी थे।
- धार्मिक सामाजिक सुधार आंदोलन का कुछ रूढ़िवादी हिन्दूओं ने 'सनातन धर्म सभा' भारत धर्म महामंडल और 'ब्राह्मण सभा' जैसे—संगठनों के माध्यम से विरोध किया।
- 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना 1897 ई. में स्वामी विवेकानन्द ने अपने गुरू रामकृष्ण परमहंस के नाम पर कलकत्ता में किया था। रामकृष्ण मिशन का मुख्य उद्देश्य गरीबों की सेवा है।
- दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना 1875 ई. में की।
- सर सैय्यद अहमद खाँ 1875 ई. में अलीगढ़ में मोहम्मडन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज खोला जो बाद में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय बना।
- पारसी समाज में सुधार के लिये, दादा भाई नौरोजी, आर. के. कामा., एस. एस. बंगाली तथा फरदोनजी ने मिलकर 1851 ई. में 'रहनुमाई मजदयासन सभा' का गठन किया।
- सिक्ख समाज में सुधार के लिये 'सिंह सभा' की स्थापना 1873 ई. में अमृतसर में की गई।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) ऋग्वेद में वर्णित चार प्रकार के वर्णो में निम्नांकित में से कौन नहीं है ?

(क) ब्राह्मण (ख) शूद्र (ग) राजपूत (घ) वैश्य

© JCERT not to be republished

(2) कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना (1817 ई.) किसके द्वारा किया गया था ?

(क) दादा भाई नौरोजी
(ख) आत्माराम पांडुरंग
(ग) राजा राममोहन रॉय
(घ) इनमें से नहीं

(3) 19वीं सदी में कुछ भारतीय मॉरिशस, त्रिनीदाद, इंडोनेशिया आदि जैसे देशों में काम करने गये। वहाँ जाने का निम्नांकिन में से कौन-सा कारण नहीं था ?

(क) गरीबी
(ख) सवर्णो का शोषण
(ग) छुआ-छूत
(घ) विदेश-भ्रमण की इच्छा

(4) बी.आर. अम्बेडकर उच्च अध्ययन के लिये कहाँ गये ?

(क) इंग्लैण्ड (ख) अमेरिका (ग) जापान (घ) फ्रांस

(5) दलितों की स्थिति सुधारने के लिये किसने 1932 ई. में 'अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ' की स्थापना किया ?

(क) बी. आर. अम्बेडकर
(ख) ई. वी. रामास्वामी पेरियार
(ग) आत्मा राम पांडुरंग
(घ) महात्मा गाँधी

(6) ब्रह्म समाज को किसने लोकप्रिय बनाया ?

(क) राजा राम मोहन रॉय
(ख) देवेन्द्र नाथ टैगोर
(ग) केशव चन्द्र सेन
(घ) इनमें से नहीं

(7) 1893 ई. में आयोजित प्रथम विश्व धर्म सम्मेलन अमेरिका के किस शहर में हुआ था ?

(क) वाशिगंटन (ख) शिकागो (ग) न्यूयार्क (घ) मिशिगन

(8) न्यूयार्क हेराल्ड के अनुसार—"ऐसे विद्वान राष्ट्र में धर्म प्रचार को भेजना कितना मूर्खतापूर्ण है।"— इसमें विद्वान राष्ट्र किस देश को कहा गया है।

(क) अमेरिका (ख) भारत (ग) इंग्लैण्ड (घ) जापान

(9) विवेकानन्द को 'आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन का आध्यात्मिक पिता' किसने कहा ?

(क) महात्मा गाँधी
(ख) भगत सिंह
(ग) सुभाष चन्द्र बोस
(घ) चन्द्रशेखर आजाद

© JCERT not to be republished

(10) जातीय भेदभाव को समाप्त करने तथा महिलाओं को स्थिति सुधारने के लिये -स्थापित वेद समाज की स्थापना किस शहर में की गई थी ?

(क) दिल्ली (ख) कलकत्ता (ग) बम्बई (घ) मद्रास

(11) आर्य समाज के स्थापनाकर्त्ता दयानन्द सरस्वती का जन्म वर्तमान के किस राज्य में हुआ था ?

(क) महाराष्ट्र (ख) राजस्थान (ग) मध्य प्रदेश (घ) गुजरात

(12) बम्बई में स्थापित रहनुमाई मजदयासन सभा का गठन कब किया गया था ?

(क) 1851 (ख) 1861 (ग) 1871 (घ) 1881

उत्तर—(1) ग, (2) ग, (3) घ, (4) ख, (5) घ, (6) ग, (7) ख, (8) ख, (9) ग, (10) घ, (11) घ, (12) क।

(ब) रिक्त स्थानों की पूर्त्ति करें—

(1) 19वीं सदी में भारत में धार्मिक-सामाजिक सुधार आंदोलन को .... भी कहा जाता है।

(2) जाति-व्यवस्था में .... को सर्वश्रेष्ठ माना जाता था।

(3) ज्योतिराव फुले निम्न जाति के कन्याओं के लिये पहला विद्यालय .... ई. में खोला।

(4) स्वामी विवेकानन्द के बचपन का नाम .... था।

(5) दादा भाई नौरोजी .... धर्म को मानते थे।

उत्तर—(1) पुनर्जागरण, (2) ब्राह्मण, (3) 1848, (4) नरेन्द्रनाथ दत्त, (5) पारसी।

(स) लघुउत्तरीय प्रश्न—

(1) परमहंस मण्डली के गठन और कार्यों के बारे में चर्चा करें।

(2) प्रथम विश्व के समय जूते बनाने वालों को क्यों लाभ हुए ?

(3) 'पेरियार' ने कांग्रेस पार्टी क्यों छोड़ दी थी ?

(4) 'अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय' के बारे में बताएँ।

(5) शिक्षा का जाति-सुधार आंदोलन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(द) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न—

(1) राजा राममोहन रॉय को आधुनिक भारत का पिता क्यों कहा जाता है ?

(2) ज्योतिराव फूले के कार्यों एवं 'उपलब्धियों' को बताएँ।

(3) बीसवीं सदी में जाति-सुधार आंदोलन क्यों जोर पकड़ा ? विस्तार से बताएँ।

© JCERT not to be republished